Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

छत्तीगढ़ के शैल चित्रकला - रायगढ़ एवं सारंगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में

श्री लेखराज मांडलेय [1], डा प्रमोद कुमार कुर्रे [2]

[2] अतिथि सहायक प्राध्यापक, इतिहास, शासकीय लोचन प्रसाद पांडेय महाविद्यालय सारंगढ़ (छ.ग.)

[2] अतिथि ग्रंथपाल, शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)

सारांश

संसार के मानव जाति की हर सभ्यता वक्त की रेत पर अपने निशान छोड़ जाती है, ऐसे ही शैलचित्रों की अनोखी दुर्लभ श्रृंखला छत्तीसगढ़ प्रदेश के रायगढ़ और सारंगढ़ जिले की पहाडियों में बिखरी हुई है, जो सदियां बीतने पर भी धूमिल नहीं हुई है और प्रागैतिहासिक काल से मानव विकास क्रम की कहानियां बयाँ कर रही हैं। रायगढ़ और सारंगढ़ जिले में हजारों वर्ष पुराने पाषाणकालीन समृद्धशाली शैलचित्रों का खजाना है, जो न केवल देश एवं प्रदेश में बल्कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। ऐसी दुर्लभ पुरासंपदा हमारी प्राचीन सभ्यता के जीवंत अमूल्य अवशेष है। रायगढ़ जिले में आदिम मानवों द्वारा निर्मित शैल चित्र निम्न स्थलों से मिले है - सिंघनपुर, कबरा पहाड़, ओंगना, नवागढ़ पहाड़ी, करमागढ़, बसनाझर, भैंसगढ़ी, खैरपुर, बेनिपाट, ऐसे ही नव निर्मित जिला सारंगढ़ के जैसे अनेक स्थानों में जैसे -सिरौलीडोंगरी ,गाताडीह, बैनीपाट, और बह्मनदेई के शैलाश्रय में शैलचित्र उकेरे गए है, जिनमें पशु-पक्षी, आखेट के दृश्य, परम्परा, जीवनशैली,शिकारों के ये चित्र इनके जीवन के प्रतिबिम्ब थे। इन चित्रों के साथ अनेक सांकेतिक चिन्ह. जैसे -हाथ के पंजों के चिन्ह , गोल या चौकोर अन्य चिन्ह आदि, स्पष्ट है कि विशेष अर्थो लिए प्रयुक्त होते रहे होगे। पर्व एवं त्यौहार का चित्रांकन दीवारों पर किया गया है। ऐसे पेंटिंग विश्व के अन्य देशों फ्रांस, स्पेन, आस्ट्रेलिया एवं मेक्सिको में भी पाये गए हैं। प्रागैतिहासिक काल में आदिम मानव इन सघन एवं दुर्गम पहाडियों में गुफाओं एवं कंदराओं में निवास करते थे और यहां सभ्यता का विकास होता गया। आदिम कुशल चित्रकारों द्वारा बनाये इन शैलचित्रों में उनकी जीवनशैली एवं परिवेश की अनुगूंज सुनाई देती है, जिसकी भावनात्मक अभिव्यक्ति इन रेखाचित्रों के रूप में उभरकर सामने आती है। आदिमानव रंगों के प्रयोग से अनभिज्ञ नहीं थे। यह शैलचित्र हमारे पुरखों द्वारा दिया गया बहुमूल्य उपहार है।

प्रस्तावना:-

छत्तीसगढ़ में प्राचीन से अर्वाचीन समृद्ध सभ्यता और संस्कृति के परिचायक मूर्त एवं अमूर्त धरोहरों में यहाँ के चित्रित शैलाश्रयों का प्रथम स्थान है। ये सभ्यता के प्रारंभिक चरण में तत्कालीन मानव के अवचेतन मन में पनप रहे प्रदर्शनकारी कलाओं की न केवल अभिव्यक्ति वरन् उसके भौतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के दर्शन का प्रमुख आधार भी हैं।

घने जंगलो से आच्छादित छ० ग० के पर्वत और चट्टानों पर प्राचीन काल के मानव की चित्रकला के दर्शन आज भी कहीं - कहीं होते है। ये शैल-चित्र भी जिन्हें बीस हजार से लेकर पचास हजार से भी पूर्व का अनुमान किया जाता है जो कि मानवीय सभ्यता के विकास के प्रथम चरण की ओर संकेत करते हैं। लगता है इन्हीं चित्र-

शिल्पों से अक्षर और लिपियों का विकास हुआ होगा। आदि मानव के पास अपने हृदयगत भावो और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए इन चित्र-शिल्पों के अतिरिक्त और कोई विकसित तथा सुगम साधन भी तो नहीं था। इस प्रकार के टेकनिक स्पेन, अफ्रीका , अमेरिका आदि देशो में मिले हुए चित्रों से इतनी समानता रखते है कि हमें यह मानने के लिए विवश होना पड़ता है कि या तो इन स्थानों में एक ही प्रकार की संस्कृति वाले लोगों का निवास रहा होगा या ये सब देशवासी एक दूसरे की संस्कृति से परिचित रहे होगे क्योकि बिना परस्पर सम्पर्क स्थापित किये, यह कदापि सभव नहीं।

ये प्राचीन मानव, पहाड़ो और गुफाओं में रहते थे तथा वन प्रदेशों में जानवरों का शिकार करके जीवन यापन करते थे। उन चित्रों को देखकर लगता है कि इन्हें चित्रकला का प्रारंभिक जानकारी तो रही ही होगी। साथ ही साथ इन्हें रंगों की जानकारी भी थी जिसका उपयोग करके ये चट्टानों पर चित्र उकेरा करते थे। शिकारों के ये चित्र इनके जीवन के प्रतिबिम्ब थे। इन चित्रों के साथ अनेक सांकेतिक चिन्ह. जैसे-हाथ के पंजों के चिन्ह , गोल या चौकोर अन्य चिन्ह आदि, स्पष्ट है कि विशेष अर्थो लिए प्रयुक्त होते रहे होगे। 1910 में सी.डब्ल्यू. एण्डरसन द्वारा सिंघनपुर के चित्रित शैलाश्रय की खोज के साथ ही छत्तीसगढ़ में इस दिशा में अन्वेषण, अध्ययन की शुरूआत हुई।

मूल शब्द:- सारंग, शैलाश्रय, गोड, गढ़, मत्स्यांगना, गजमार पहाड़, प्रागैतिहासिक, सिरोली डोंगरी, लाल गेरू।

परिचय

रायगढ़ जिला के उत्तर में जशपुर जिला, दक्षिण में महासमुन्द जिला तथा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पूर्व तक उडिसा राज्य की सरहद से 6527.44 वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला रायगढ़ जिला उत्तरी क्षेत्र जहां बिहड़, जंगल, पहाडियो से आच्छादित है। वही इसका दक्षिण हिस्सा ठेठ मैदानी है। जिले की बहुसंख्यक आबादी गांवो में निवास करते है। विरहोर इस जिले के विशिष्ट जनजाति है, जो धरमजयगढ़ क्षेत्र में निवास करते है। गोंड, कंवर, उरांव अन्य प्रमुख जनजातियों की सूची में शामिल है।रायगढ़ राजा मदनसिंह चॉदा ने महानदी के पार बूनगा के पास "राय" नामक गढ़ की स्थापना की। यहीं से रायगढ़ की उत्पति हुई।

जिला रायगढ़ एवं बलौदाबाजार-भाटापरा के विभाजन के माध्यम से जिला सारंगढ़-बिलाईगढ़ 1 सितंबर 2022 को अस्तित्व में आई। यह छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर पूर्वी दिशा में स्थित है। जिले का मुख्यालय सारंगढ़ में है। सारंगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर से 201 किमी दूर है। छ.ग. राज्य के स्वतंत्रता आंदोलन में सारंगढ़ क्षेत्र में किसान आंदोलन एवं जंगल सत्याग्रह हुए हैं। सारंगढ़ क्षेत्र 14 रियासतों में से एक था। यहां के गोड शासक शासन करते थे जिसमें भव्य महल गिरीविलास पैलेस सुन्दरता के मामले में अनमोल है। आजादी के समय यह मध्य प्रांत का हिस्सा था। 1 सितंबर 2022 को जिला सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले रायगढ़ एवं बलौदाबाजार-भाटापरा से पृथक होने के बाद अस्तित्व में आया।

सारंगढ़ का नामकरण - सारंग शब्द के अनेक अर्थ पर्यायवाची है जिनमें एक अर्थ बांस भी होता है यहाँ इसकी प्रचुरता के कारण सारंगढ़ कहलाता है। गढ़ का अर्थ किला या किले नुमा भूमि है। पंड़ित लोचन प्रसाद पाण्डे-

इसका अर्थ चिमय मृग के बहुतामय से मिलते है से लिया। डॉ० विनय कुमार पाठक सारंग पक्षी की बहुलता से नामकरण बतलाते है।

रायगढ़ जिले के विभिन्न शैल चित्रकला स्थल

1. सिंघनपुर

छत्तीसगढ़ राज्य के रायगढ़ जिले में सिंघनपुर नामक स्थान पर एक चित्रित शैलाश्रय स्थित है। यह शैलाश्रय दक्षिणाभिमुखी है और रायगढ़ से 20 किलोमीटर पश्चिम में एक पहाड़ी पर वर्षों पूर्व प्रकृति द्वारा निर्मित है। मध्य दक्षिण पूर्वी रेलमार्ग के बिलासपुर झारसगुड़ा सेक्शन पर स्थित भूपदेवपुर नामक स्टेशन से यह स्थल दक्षिण में एक किलो मीटर की दूरी पर है। यह छत्तीसगढ़ में प्राप्त प्राचीन शैलचित्र युक्त शैलाश्रयों में से एक है, जिसकी तिथि लगभग ईसापूर्व 30 हज़ार वर्ष निर्धारित की गई है। इनकी खोज एंडरसन द्वारा 1910 के आसपास की गई थी। इंडिया पेंटिग्स 1918 में तथा इन्साइक्लोपिडिया ब्रिटेनिका के 13 वें अंक में रायगढ़ जिले के सिंघनपुर के शैलचित्रों का प्रकाशन पहली बार हुआ था। तत्पश्चात श्री अमरनाथ दत्त ने 1923 से 1927 के मध्य रायगढ़ तथा समीपस्थ क्षेत्रों में शैल चित्रो का सर्वेक्षण किया। डॉ एन. घोष, डी. एच. गार्डन द्वारा इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। तत्पश्चात स्व. पंडित श्री लोचनप्रसाद पांडेय द्वारा भी शैलचित्रो के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करायी गई।

इस शैलाश्रय के चित्र अधिक समय बीत जाने एवं प्राकृतिक दुष्प्रभावों के कारण धूमिल हो गए हैं। अंकित चित्रों में सीढ़ीनुमा पुरुष, मत्स्यांगना, शिकार दृश्य, पंक्तिबद्ध नर्तक टोली एवं मानवाकृतियाँ सम्मिलित हैं। मत्स्यांगना, कंगारू सदृश पशु, गोह एवं सर्पाकृति के अंकन अद्वितीय हैं। इस शैलाश्रय में पहले २३ कलाकृतियाँ देखी गयी थीं जिनमें से अब केवल १३ ही बची हैं। यहाँ की सीढ़ीनुमा लम्बी मानवाकृति की तुलना आस्ट्रेलिया में प्राप्त सीढ़ीनुमा पुरुष से की जाती है। विविध पशु आकृतियाँ, वन भैंसा, बंदर, छिपकली तथा अन्य चित्रों के अंकन में आदिमानवों की कला-संस्कृति आज भी जीवित है। चित्रित शैलाश्रयों के चित्रों के अध्ययन से वहाँ रहने वाले निवासियों के उस काल के जीवन और पर्यावरण तथा प्रकृति की जानकारी प्राप्त होती है। स्मारक छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा संरक्षित है।शिकार के दृश्य और बहुत कुछ दर्शाया गया है। आम तौर पर लाल गेरू से बने, सिंघनपुर गुफा में विभिन्न जानवरों के चित्र भी देखे जा सकते हैं।

2. कबरा पहाड़

कबरा' छत्तीसगढ़ी शब्द है, जिसका मतलब होता है- धब्बेदार (spotted)। वनस्पतियों के हरे-भरे कनवास में जगह-जगह उघड़े बलुआ चट्टानों की वजह से पूरा पहाड़ दूर से धब्बेदार दिखाई देता है। पहाड़ का यह नाम इसी वजह से है, लेकिन इसका मूल नाम स्थानीय लोग 'गजमार पहाड़' बतलाते हैं।

प्रदेश की राजधानी रायपुर के उत्तर-पूर्व में लगभग 270 किमी. दूर, जिला मुख्यालय रायगढ़ नगर के पूरब में राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक- 217 के 13वें किमी पर और समीपवर्ती राज्य ओडिशा की सीमा से मात्र आठ किमी

पहले ग्राम पंचायत लोइंग के पश्चिम में दो किमी पर उसका आश्रित ग्राम है- भोजपल्ली। उल्लेखनीय है कि 1972 के पहले इस गाँव का नाम भेजरापाली हुआ करता था।

शैलाश्रय की दीवार पर 25-30 फुट की ऊँचाई तक चित्रों का अंकन देखा जा सकता है। ऊँचाई पर बने चित्रों को देखकर उन्हें बनाने वाले की कठोर श्रमसाध्यता का केवल अनुमान ही किया जा सकता है। इतनी ऊँचाई पर निर्मित चित्रों के आस-पास ऐसा कोई चट्टानी आधार भी नहीं है, संभव है कि तत्कालीन मानव ने ऊँचाई पर चित्रकारी के लिए सीढ़ी का उपयोग किया हो।इस शैलाश्रय में जंगली जीव, जलीय जीव, सरीसृप और कीट-पतंगों के साथ ही भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की रेखाकृतियों का अंकन है। यहाँ के चित्रों में जटिल रेखांकन जैसे सर्पिल ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाएं, त्रिकोण आकृति, 36 आरियों वाले पहिये (जो अनुष्ठानिक भी हो सकता है), के अलावा जंगली पशु जैसे लकड़बग्घा, हिरण (गर्भिणी), साही, नीलगाय और बारहसिंगा; जलीय जीव जैसे कछुवा, मछली, केंचुवा; पक्षी जैसे मोर; सरीसृप जैसे गोह अथवा छिपकली; कीट जैसे तितली और मकड़ी एवं नाचते हुए मानवपंक्ति तथा ताड़ वृक्ष का अंकन उल्लेखनीय हैं।

3. बसनाझार

बसनाझार सिंघनपुर से लगभग 17 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक गाँव है। इस गाँव की पहाड़ियों में 300 से ज़्यादा चित्रकलाएँ मौजूद हैं, जिनमें सजे-धजे हाथी, बंदर, जलपरी, घोड़े, जंगली भैंसा, शिकार के दृश्य, नृत्य के दृश्य, ज्यामितीय डिज़ाइन आदि के सुंदर दृश्य उल्लेखनीय हैं।

4. ओंगना

रायगढ़ से 72 किमी उत्तर में (धर्मजयगढ़ से 6 किमी दक्षिण-पूर्व में) बानी पहाड़ियाँ स्थित हैं। इन पहाड़ियों पर 100 से ज़्यादा शैलचित्र हैं। यह जानना दिलचस्प है कि इस आश्रय में कई तरह की पेंटिंग्स हैं। बड़े कूबड़ वाले बैल और मानव आकृतियों के सजे हुए सिर के गियर इस आश्रय की खासियत हैं। ओंगना के शैलचित्रों में रचनात्मक नृत्य शैलियों को भी बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया है।

5. कर्मगढ़

अगर आप रायगढ़ से सिर्फ 30 किमी उत्तर की ओर यात्रा करते हैं, तो आपको कर्मगढ़ में 325 मनमोहक शैलचित्र देखने को मिलेंगे। ज्यामितीय डिज़ाइन, इंसानों और जानवरों की बहुरंगी आकृतियाँ इसे एक प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षण बनाती हैं।

6. खैरपुर,

कला का अनंत खजाना खैरपुर में पर्यटकों को आकर्षित करता रहता है, जो कि तिलखोल जलाशय के पास रायगढ़ से लगभग 12 किमी उत्तर में स्थित है। यहाँ के आश्रयों में प्रागैतिहासिक काल से संबंधित कई नृत्य दृश्य और जानवरों की आकृतियाँ मौजूद हैं।

7. बोतलदा

बिलासपुर-रायगढ़ मार्ग पर खरसिया स्थित है। खरसिया से महज 8 किलोमीटर पश्चिम में बोतलदा गांव है। यहां की पहाड़ी श्रृंखला पर सिंह गुफा नामक एक गुफा है, जो 2000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां मध्यपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के अनोखे शैलचित्र देखे जा सकते हैं। इनमें पशु आकृतियां, मानव आकृतियां, शिकार के दृश्य और ज्यामितीय डिजाइन शामिल हैं।

8. भंवरखोलः

रायगढ़ से करीब 66 किलोमीटर उत्तरपश्चिम या बिलासपुर से 12 किलोमीटर दूर बिलासपुर-खरसिया मार्ग पर सुतीघाट और पतरापाली गांवों के बीच पर्वतमालाओं की पहाड़ियों में शैलचित्र पाए जाते हैं। इन्हें भंवरखोल के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ हमें जलपरी, जंगली भैंसे, भालू, शिकार के दृश्य, हथेली के निशान, ज्यामितीय डिजाइन और स्वस्तिक के चित्र देखने को मिलते हैं। कुछ चित्र मौसम की मार से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। ये शैलचित्र सफेद पत्थर और अन्य विभिन्न रंग के पत्थरों से बनाए गए हैं।

9. अमरगुफा

अमरगुफा सोनबरसा गाँव से लगभग 11 किमी दक्षिण में स्थित है, जो मुख्य सड़क पर खरसिया से मात्र 2 किमी दूर है। यहाँ पशु आकृतियाँ, मानव आकृतियाँ, शिकार के दृश्य आदि दर्शाए गए हैं।

10. सुतीघाट

यह स्थल बिलासपुर-रायगढ़ मार्ग पर पतरापाली गाँव के पास स्थित है। सुतीघाट में आश्रय स्थलों पर कृषि गतिविधियों जैसे खेत में काम करने वाले किसान और विभिन्न जानवरों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है।

सारंगढ़ के शैल चित्र स्थल :-

1. गाताडीह

सारंगढ़ के पास स्थित एक शैलाश्रय में सुंदर शैलचित्रों के माध्यम से पशु आकृतियाँ, विस्तृत शिकार के दृश्य और मानव आकृतियाँ चित्रित की गई हैं।

2. सिरोली डोंगरी

सारंगढ़ नगर के उत्तर-पश्चिम में 5 किमी दूर सिरोली डोंगरी के शैलचित्र हैं। बहुत ही दुर्लभ और अद्वितीय, यह शैलाश्रय स्थल बलुआ पत्थर में उकेरा गया है और छत्तीसगढ़ के चंद्रपुरी समूहों से संबंधित है। मानव आकृतियाँ, पशु आकृतियाँ, शिकार के दृश्य, नृत्य के दृश्य, ताड़ के निशान, नाव जैसी आकृतियाँ, कई ज्यामितीय आकृतियाँ और कुछ अजीब दिखने वाले कीड़े सभी लाल गेरू में गढ़े गए हैं। अच्छी तरह से बने कप्यूल, जिनकी गिनती तब 37 थी, एक प्राकृतिक रूप से बने छत्र प्रकार के चट्टान निर्माण के नीचे एक क्षैतिज चट्टान बिस्तर में उकेरे गए हैं।

3. बैनीपाट

रायगढ़ से 32 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित भैसगढ़ में घने बांस के जंगल में प्रवेश करते ही, आपको चार शैलाश्रय मिलेंगे, जिनमें शैल चित्र हैं जो अब फीके पड़ने लगे हैं। बैनीपाट में ज्यामितीय डिजाइन और जानवरों की आकृतियाँ चित्रित हैं।

4. बह्मनदेई

सारंगढ़ के समीप बह्मनदई पहाड़ी स्थित है। इस पहाड़ी में शैलाश्रय प्राप्त हुआ है। यह एक ऊँची पहाड़ी है। आदिमानवों द्वारा प्राकृतिक रंगों के उपयोग से हिरण, मनुष्य, मगरमच्छ, जाल, शेर आदि के चित्र बनाये गए हैं। यह चित्र सैंकड़ों वर्षों से उसी रंग-रूप में विद्यमान है।

निष्कर्ष :-

जहाँ कालातीत रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ राष्ट्रीय विरासत का एक मूल्यवान हिस्सा बनती हैं । छत्तीसगढ़ मुख्य रूप से अपने विशाल वन क्षेत्र, खनिज संपदा और जनजातियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति के लिए जाना जाता है। राज्य के बारे में इन सामान्य ज्ञात तथ्यों के अलावा और भी बहुत कुछ है। जो लोग कम चलने वाले रास्तों की खोज करना पसंद करते हैं, उनके लिए छत्तीसगढ़ अपने असंख्य अजूबों के साथ ऐसे लोगों के लिए एक शानदार विकल्प है। प्रागैतिहासिक काल की गुफा कला और पत्थर शिल्प वैज्ञानिकों, खोजकर्ताओं , इतिहास के विधार्थियो और भूवैज्ञानिकों के लिए सबसे दिलचस्प विषयों में से एक है। छत्तीसगढ़ पाषाण युग के मनुष्य की रॉक पेंटिंग का खजाना है। ये उनके जीवन, उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक रुचियों पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।कई प्रागैतिहासिक स्थलों की उपस्थिति भारत के शीर्ष पर्यटन स्थलों में इसकी स्थिति को बढ़ाती है। ये पुरावशेष छत्तीसगढ़ को उन कुछ राज्यों में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करते हैं जिनकी देश की प्राचीन सभ्यता में प्रमुख भूमिका थी। इन प्रागैतिहासिक अवशेषों में सबसे महत्वपूर्ण छत्तीसगढ़ की रॉक पेंटिंग हैं जिन्हें राज्य भर में 31 से अधिक स्थलों पर देखा जा सकता है। ये शैलचित्र पुरातात्विक और ऐतिहासिक दृष्टि से प्रासंगिक हैं। ये उस सभ्यता के जीवन और संस्कृति को प्रकट करते हैं जो वर्षों पहले एक ऐसी भूमि पर पनपी थी जिसे हम केवल उसके आधुनिक रूप में ही जानते हैं। यहीं पर छत्तीसगढ़ एक ऐसे पर्यटक का ध्यान आकर्षित करता है जो इसे विद्वानों के दृष्टिकोण से नहीं देखता। शैलचित्र उस युग की निपुणता और उन्नति को प्रदर्शित करते हैं जिसे हम आमतौर पर आदिम कहते हैं और जिसे देखने वाला निश्चित रूप से विस्मय से भर जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. वर्मा, भगवान सिंह - छत्तीसगढ़ का इतिहास, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी 2001, पृ, 273,
2. गुप्त, प्यारेलाल - प्राचीन छत्तीसगढ़, पृ. - 8
3. संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, छत्तीसगढ़ शासन (जनवरी 2006). धरोहर : राज्य के संरक्षित स्मारक. रायपुर, छत्तीसगढ़ शासन. पृ. - 33

4. बेहरा, डाक्टर रामकुमार - छत्तीसगढ़ का इतिहास, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2014
5. पाण्डेय, पं. लोचन प्रसाद. 'प्राच्या प्रतिभा', महाकोसल हिस्टारिकल सोसायटी पेपर्स. अँक 9-10
6. शर्मा, आर. के. 2010. मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
7. डॉ.शुक्ला, सुरेशचन्द्र 2018, छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास, मातुश्री पब्लिकेशन, रायपुर , पृष्ठ - 269
8. दत्ता, अमरनाथ. 1931. अ प्रीहिस्टॉरिक रेलिक्स एण्ड द रॉक पेंटिंग्स ऑफ सिंघनपुर.
9. ब्राउन, पर्सी. 1917. इण्डियन पेंटिंग्स, हेरिटेज ऑफ इण्डिया सीरीज.
10. गुप्त, जगदीश. 1965. प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला.